पाठ 3

सच्ची वीरता

(प्रस्तुत पाठ में सच्चे वीर पुरुषों के धैर्य, साहस, और स्वाभिमान जैसे गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि वीर पुरुष प्रत्येक स्थिति में सच्चाई का साथ देते हैं।)

सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शक्ति समुद्र की तरह विशाल और गहरी तथा आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है, परन्तु जब ये शेर गरजते हैं तब सदियों तक उनकी दहाड़ सुनायी देती रहती है और अन्य सब आवाजें बन्द हो जातीहैं।

एक बार एक बागी गुलाम और एक बादशाह के बीच बातचीत हुई। यह गुलाम कैदी दिल से आजाद था। बादशाह ने कहा, 'मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। तुम क्या कर सकते हो'? गुलाम बोला 'हाँ मैं फाँसी पर तो चढ़ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ। इस गुलाम ने दुनिया के बादशाहों के बल की हद दिखला दी। बस इतने ही जोर और इतनी ही शेखी पर ये झूठे राजा मारपीट कर कायर लोगों को डराते हैं। चूँकि लोग शरीर को अपने जीवन का केन्द्र समझते हैं इसलिए जहाँ किसी ने इनके शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाया वहीं वे मारे डर के अधमरे हो जाते हैं। केवल शरीर-रक्षा के निमित्त ये लोग इन राजाओं की ऊपरी मन से पूजा करतेहैं।

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। फौज, तोप, बन्दूक आदि के बिना ही वे शहंशाह होते हंै। मंसूर ने अपनी मौज में आकर कहा कि मैं

खुदा हूँ। दुनियावी बादशाह ने कहा 'यह काफिर है'। मगर मंसूर ने अपने कलाम को बन्द न किया। पत्थर मार-मारकर दुनिया ने उसके शरीर की बुरी दशा की परन्तु उस मर्द के मुँह से हर बार यही शब्द निकला 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि) मैं ही ब्रह्म हूँ। मंसूर का सूली पर चढ़ना उसके लिए सिर्फ खेल था।

महाराजा रणजीत सिंह ने फौज से कहा अटक के पार जाओ। अटक चढ़ी हुई थी और भयंकर लहरें उठी हुई थीं। जब फौज ने कुछ उत्साह प्रकट न किया तब उस वीर को जोश आया। महाराजा ने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। कहा जाता है कि अटक सूख गयी और सब पार निकल गये।

लाखों आदमी मरने-मारने को तैयार हो रहे हैं। गोलियाँ धुआँधार बरस रही हैं। आल्प्स के पहाड़ों पर फौज ने चढ़ना ज्यांे ही असम्भव समझा त्यों ही वीर नेपोलियन को जोश आया और उसने कहा, 'आल्प्स है ही नहीं'। फौज को निश्चय हो गया कि आल्प्स नहीं है और सब लोग पहाड़ के पार हो गये।

एक भेड़ चराने वाली और सत्त्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या के दिल में जोश आते ही फ्रांस एक शिकस्त से बच गया।

वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी उसकी अभिव्यक्ति लड़ने मरने में, खून बहाने मंे, तलवार तोप के सामने जान गँवाने में होती है तो कभी जीवन के गूढ़ तत्त्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया। एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार, एक नयी प्रभुता संसार में छा गयी। वीरता हमेशा निराली और नयी होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता देश काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई तभी एक नया स्वरूप लेकर आयी, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गये।

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में खुद ब खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये, बिना किसी के हाथ लगाये तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं।

हर बार दिखावा और नाम के लिए छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना पहले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। बन्दूक में केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। हाँ! कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका मनोबल (जीवन) किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाय। गरजने वाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परन्तु बरसने वाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं।

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाये तो हिल जाये परन्तु वीर के दिल में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो मगर वीरों की नीति, बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। वह वीर क्या, जो टीन के बर्तन की तरह झट से गर्म और ठंडा हो जाता है। सदियों नीचे आग जलती हो तो भी शायद गर्म हो और हजारों वर्ष बर्फ उस पर जमती रहे तो भी क्या मजाल जो उसकी वाणी तक ठंडी हो। उसे खुद गर्म और सर्द होने से क्या मतलब! सत्य की सदा जीत होती है। यह भी वीरता का एक चिह्न है। विजय वहीं होती है जहाँ पवित्रता और प्रेम है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। जो अपने आप को उन नियमों के साथ अभिन्न करके रहता है, उसी की विजय होती है।

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अन्दर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है परन्तु प्रायः वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण यही है कि हम सबको केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो और सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह को छोड़कर जीवन की तहों में घुसो तब नये रंग खिलेंगे।

-सरदार पूर्ण सिंह

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी सन्1881 ई0 को में एक सिख परिवार में हुआ था। ये पेशे से अध्यापक थे। विचार और भावात्मकता इनके निबन्धों की मुख्य विशेषताएँ हैं। 'मजदूरी और प्रेम', 'सच्ची वीरता', 'आचरण की सभ्यता' आदि इनके प्रसिद्ध निबन्ध हैं। इनका निधन सन् 1931 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

तिरस्कार = अपमान, अनादर। शेखी = हेकड़ी, शान। काफिर = ईश्वर को न मानने वाला, सत्य को छिपाने वाला। कलाम = वाणी, शब्द, वार्तालाप। अटक = सिन्धु नदी। नेपोलियन = फ्रांस का महान योद्धा (राजा)। सत्त्वगुण = सादगी और सच्चाई से युक्त। 'सत्त्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या' = यहाँ लेखक फ्रांस की वीरांगना 'जोन आॅफ आर्क' का उल्लेख कर रहा है, जिसने फ्रांस पर चढ़ाई करने वाले शत्रुओं का डट कर मुकाबला किया और उन्हें परास्त किया। शिकस्त = पराजय, हार। अभिव्यक्ति = प्रकट होना, प्रकाशन, व्यक्त होना। अन्तः प्रेरणा = अपने मन की प्रेरणा। अरण्य = जंगल, वन। बुजदिली = कायरता। कुदरत = प्रकृति।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

किसी भी साहसपूर्ण कार्य को बहादुरी से करना वीरता कहलाती है। सोचिए और लिखिए कि आपके आस-पास घटने वाली वे कौन-कौन सी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनमें आप बहादुरी का परिचय दे सकते हैं।

विचार और कल्पना

1. वीर पुरुष की तुलना बरसने वाले बादल से और कायर पुरुष की तुलना गरजने वाले बादल से क्यों की गयी है ?

2. 'सच्चा वीर' बनने के लिए आप अपने भीतर किन गुणों को विकसित करेंगे ?

3. 'वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते'-आप इस बात से सहमत हैं या असहमत कारण सहित स्पष्ट करें।

निबन्ध से

1. किसने क्या कहा ? कोष्ठक में दिये गये नामों से चुनकर वाक्य के सामने लिखिए -

(महाराजा रणजीत सिंह, मंसूर, नेपोलियन, बादशाह)

(क) 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि)। .....

(ख) मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। .....

(ग) अटक के पार जाओ। .....

(घ) 'आल्प्स है ही नहीं'। .....

2. लेखक के अनुसार दुनिया किस पर खड़ी है -

(क) धन और दौलत पर।

(ख) ज्ञान और पांडित्य पर।

(ग) हिंसा और अत्याचार पर।

(घ) धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर।

3. अपने अन्दर की वीरता को जगाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? उपयुक्त कथन पर सही (झ्) का चिह्न लगाइए-

(क) हथियारों को एकत्र करना चाहिए।

(ख) वाद-विवाद करना चाहिए।

(ग) सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए।

(घ) झूठी बातें करनी चाहिए।

4. सच्चे वीर पुरुष में कौन-कौन से गुण होते हंै ?

5. बादशाह द्वारा जान से मारने की धमकी देने पर गुलाम ने क्या कहा ?

6. शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाने पर लोग मारे डर के अधमरे क्यों हो जाते हैं ?

7. लेखक ने वीरों को देवदार के वृक्षों के समान क्यों कहा है ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए -
डर से अधमरा होना, छाती ठोंककर आगे बढ़ना, रास्ता साफ होना, रंग चढ़ना, दिल को बाँध देना।
2. आजाद, गुलाम, बादशाह, कैदी, फौज, दरिया और कुदरत उर्दू के शब्द हैं। हिन्दी में इनके समानार्थी शब्द लिखिए।
3. 'सत्त्व' शब्द में 'त्व' प्रत्यय जुड़कर सत् $ त्व = सत्त्व बन गया है। नीचे लिखे शब्दों में 'त्व' जोड़कर नये शब्द बनाइए -
महत्, प्रभु, तत्, वीर।
4. विलोम या निषेध के अर्थ में कुछ शब्दों के पूर्व 'अ' या 'अन्' जुड़ जाता है, जैसे-'सम्भव' से 'असम्भव' और 'आवश्यक' से 'अनावश्यक' शब्द बनता है। 'अन्' का प्रयोग उस समय होता है, जब शब्द के आरम्भ में कोई स्वर हो। अ, अन् की सहायता से नीचे लिखे शब्दों का विलोम शब्द बनाइए -
उपस्थित, स्थायी, साधारण, समान, उदार।
5. 'आल्प्स' शब्द आ $ ल् $ प् $ स् $ अ से बना है। इसमें ल्, प्, स् क्रम से तीन व्यंजन आये हंै, इन्हें व्यंजनगुच्छ कहा जाता है। पाठ से इस प्रकार के व्यंजनगुच्छ वाले शब्द चुनकर लिखिए।

पढ़ने के लिए-

नीचे दी गयी कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए-
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ-
जिससे उथल-पुथल मच जाए,

एक हिलोर इधर से जाए,
एक हिलोर उधर से जाए,
कंठ रुका है महानाश का
मारकगीत रूद्ध होता है,
आग लगेगी क्षण मंे हृत्तल मंे
अब क्षुब्ध-युद्ध होता है।
झाड़ और-झंखाड़ दग्ध है
इस ज्वलंत गायन के स्वर से ,
रूद्ध-गीत की क्रुद्ध तान है,
निकली मेरी अन्तरता से।